## 1.1 परिचय

आइए कुछ स्थितियों, घटनाओं, मुद्दों और लोगों पर विचार करें। नौकरी के साक्षात्कार के लिए जाते समय हम व्यक्तिगत रूप से तैयार होते हैं; लेकिन जब हम साक्षात्कार स्थल पर पहुंचते हैं तो पाते हैं कि सभी उम्मीदवार लगभग एक जैसे ही कपड़े पहने हुए हैं। वैसे ही एक और संदर्भ लें, 16 दिसंबर 2012 को दिल्ली में निर्भया की घटना के बाद, हजारों लोगों ने दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों में सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किया। महात्मा गांधी, अब्राहम लिंकन, नेल्सन मंडेला, दलाई लामा और उनके जैसे कई नेताओं ने जनता के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया और लोगों के विचार को सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और नैतिक क्रांतियों की ओर बढ़ाया। उल्लेखनीय नेतृत्व किया।

ये मानव के इतिहास से कुछ उदाहरण हैं जहां या तो हम अन्य लोगों से प्रभावित होते हैं या हम अन्य लोगों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान वह शाखा है, जो सामाजिक परिस्थितियों की एक सारणी में मानव व्यवहार का अध्ययन करती है। इस इकाई में, आपको सामाजिक मनोविज्ञान के बारे में, मनोविज्ञान की शाखा, इसकी प्रकृति, गुंजाइश और अन्य विषयों के साथ संबंध के बारे में समझाया जाएगा। आप ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से भी परिचित होंगे। ये इकाई सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण के स्तरों पर भी चर्चा करेगी।

## 1.2 परिभाषा, प्रकृति और सामाजिक मनोविज्ञान का दायरा

सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो मानव सहभागिता, इसकी अभिव्यक्तियों, कारणों, परिणामों और इसमें शामिल विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है।

### 1.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा

सामाजिक मनोविज्ञान यह बताता है कि ''हम आस'' पास के लोगों के बारे में क्या महसूस करते हैं तथा सामाजिक प्रसंग के संदर्भ में दूसरे व्यक्ति किस तरह हमारे भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को प्रभावित करते हैं''। (कस्सीन, फीन, और मार्कस, 2017)। थोड़ी अलग अभिव्यक्ति में सामाजिक मनोविज्ञान को एक अनुशासन के रूप में परिभाषित किया गया है, जो समझने और समझाने की कोशिश में वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करता है कि कैसे व्यक्तियों के विचार, भावना और व्यवहार दूसरों की वास्तविक, कल्पना या निहित उपस्थिति से प्रभावित होते हैं (गॉर्डन एल्पपोर्ट, 1985 पी. 3)।

### 1.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति

ऊपर दी गई परिभाषाओं की ध्यानपूर्वक व्याख्या से पता चलता है कि इसमें तीन प्रमुख घटक हैं जो सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति की विशेषता बतलाते हैं। इन विशेषताओं को और विस्तृत रूप से नीचे दिया गया है:

### 1.2.2.1 सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन वैज्ञानिक विधियों से होता है

सामाजिक मनोविज्ञान वैज्ञानिक प्रकृति का शास्त्र है। यह सामाजिक संदर्भ में मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए व्यवस्थित अवलोकन, विवरण और माप की वैज्ञानिक पद्धति को लागू करता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रत्यक्ष अवलोकन या प्रयोग के माध्यम से एकत्र किए जा रहे डेटा को संदर्भित करते हैं। इस तरह के प्रयोगों और अवलोकन को सावधानीपूर्वक किया जाता है और विस्तार से बताया जाता है ताकि अन्य जांचकर्ता काम को दोहरा सकें और सत्यापित कर सकें।

वैज्ञानिक सामाजिक मनोविज्ञान तीन प्रमुख गतिविधियों को करता है: सामाजिक व्यवहारों का वर्णन, व्याख्या और भविष्यवाणी। सामाजिक मनोविज्ञान सामान्य, मान्यताओं के बजाय, प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर सामाजिक व्यवहार का एक वैज्ञानिक खाता प्रदान करता है। सामाजिक मनोविज्ञान यह समझाने का भी प्रयास करता है कि लोग किसी विशेष सामाजिक स्थिति में एक विशेष तरीके से व्यवहार क्यों करते हैं। सामाजिक व्यवहारों की ऐसी परस्पर व्याख्या से सिद्धांतों का निर्माण होता है जो सामाजिक व्यवहारों की भविष्यवाणी करने और उन्हें एक वांछित दिशा में प्रबंधित करने में मदद करते हैं।

### 1.2.2.2 सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के विचार, भावना और व्यवहार का अध्ययन करता है

सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों का अध्ययन करता है जिसमें – व्यक्तियों का विचार, भावना और व्यवहार भी शामिल है। अनुभूति को उस तरीके से संदर्भित किया जाता है जिस तरह से लोग जानकारी संसाधित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान अनुभूति का अध्ययन करता है जो सामाजिक गतिविधियों से संबंधित है और जो हमारे सामाजिक व्यवहारों को समझने और भविष्यवाणी करने में हमारी मदद करता है। सामाजिक मनोविज्ञान उन भावनाओं का भी अध्ययन करता है जिन्हें हम अपने सामाजिक जीवन में एक व्यक्ति के रूप में अनुभव करते हैं। सामाजिक संदर्भ में हम जो सोचते हैं या महसूस करते हैं वह आखिरकार सामाजिक व्यवहारों में हमारे व्यवहार के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान में सहयोग, संघर्ष, आक्रामकता, आदि की सहायता के रूप में इन व्यवहारों का अध्ययन होता है।

### 1.2.2.3 सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भों में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है

सामाजिक मनोविज्ञान, सामाजिक संदर्भों में व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोविज्ञान के इस घटक से तात्पर्य है कि हमारा व्यवहार अन्य लोगों की उपस्थिति से प्रभावित होता है और हम अन्य लोगों के व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा में निर्दिष्ट सामाजिक संदर्भ को वास्तविक या वर्तमान होने की आवश्यकता नहीं है। यहां तक कि दूसरों की निहित या कल्पना की गई उपस्थिति व्यक्तियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है (*गॉर्डन एल्पपोर्ट*, 1985)। हालांकि, मानव सामाजिक व्यवहार के सामान्य सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक कभी-कभी गैर-सामाजिक कारकों की भी जांच करते हैं। कर्टलेविन (1936), जिनका योगदान इस क्षेत्र में बड़ा महत्वपूर्ण रहा है, उन्होंने सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए एक मॉडल का

प्रस्ताव रखा, जो कहता है कि सामाजिक व्यवहार स्थिति की पारस्परिक क्रिया और व्यक्ति की विशेषताओं (विस्तार के लिए बॉक्स देखें) का परिणाम होता है।

**सामाजिक विज्ञान में कुरूत नेतृत्व का समावेश अनौपचारिक सामाजिक व्यवहार के लिए एक मॉडल**

कर्ट लेविन (9 सितंबर, 1890-12 फरवरी, 1947) एक जर्मन-अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे और अक्सर "सामाजिक मनोविज्ञान के संस्थापक" के रूप में पहचाने जाते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक उन बलों में रुचि रखते हैं जो व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं और उन्हें सामाजिक व्यवहार के विशिष्ट उदाहरणों में संलग्न होने का कारण बनते हैं। आमतौर पर सामाजिक व्यवहार जटिल होता है जिसके कई जटिल कारक होते हैं। नतीजतन, सामाजिक व्यवहार को समझाना एक मुश्किल काम है। इस कार्य को सरल बनाने के लिए, हम सामाजिक व्यवहार के कई कारणों को दो व्यापक श्रेणियों में से एक में निर्दिष्ट कर सकते है। स्थिति और व्यक्ति। कर्टलेविन (1936) द्वारा पहले प्रस्तावित एक सूत्र के अनुसार, सामाजिक व्यवहार, स्थिति और व्यक्ति की विशेषताओं, या की पारस्परिक क्रिया का एक कार्य है या व्यवहार = f (सामाजिक स्थिति x व्यक्तिगत विशेषताएँ)

**बॉक्स 1.1: कर्ट लेविन का सामाजिक व्यवहार का मॉडल**

### 1.2.3 सामाजिक मनोविज्ञान का दायरा

सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक संदर्भ में व्यक्तिगत व्यवहार पर केंद्रित है, इसलिए सामाजिक मनोविज्ञान का विषय व्यक्ति के समाज और अन्य लोगों के साथ पारस्परिक अंतरक्रियाओं का अध्ययन करता है। सामाजिक दुनिया मानव के संबंधों पर आधारित है और सामाजिक मनोविज्ञान के विषय को प्रस्तुत करती है। सामाजिक मनोविज्ञान के दायरे को मोटे तौर पर निम्नलिखित तरीकों से रेखांकित किया जा सकता है:

- लोग आमतौर पर अनुमोदन और अस्वीकृति, किसी के पक्ष और विपक्ष की भावनाओं के रूप में व्यक्त करते हैं, या विभिन्न व्यक्तियों, वस्तुओं, मुद्दों के प्रति पसंद और नापसंद दर्शाते हैं जो उनके विचार और कार्यों को प्रभावित करते हैं। इस घटना को दृष्टिकोण या रवैया कहा जाता है और सामाजिक मनोवैज्ञानिक रवैये के विभिन्न पहलुओं पर जोर देते रहे हैं– जैसे रवैया का निर्माण, दृष्टिकोण संरचना, दृष्टिकोण परिवर्तन, व्यवहार का कार्य तथा दृष्टिकोण और व्यवहार के बीच संबंध।

- सामाजिक मनोविज्ञान के उभरते क्षेत्रों में से एक सामाजिक अनुभूति है, जो सामाजिक उत्तेजनाओं से संबंधित लोगों को अनुभव, विचार और याद रखने के तरीकों का अध्ययन करता है। सामाजिक अनुभूति के तहत विभिन्न घटनाएं व्यक्ति की धारणा, आरोपण प्रक्रिया, स्कीमा, रूढ़िवादिता आदि का अध्ययन होता है।

- सामाजिक मनोविज्ञान में अध्ययन का एक पारंपरिक, मुख्य क्षेत्र सामाजिक प्रभाव है जो लोगों के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करने के तरीके को संदर्भित करता है।

## 1.3 सामाजिक मनोविज्ञान का ऐतिहासयिक विकास

यद्यपि समाज में मानव व्यवहार का दार्शनिक विश्लेषण हमेशा सामाजिक चिंतकों के लिए रुचि का प्रमुख मुद्दा रहा है, लेकिन सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए एक व्यवस्थित अनुभवजन्य दृष्टिकोण उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिखता है। विकास के चरणों में सामाजिक मनोविज्ञान के इतिहास को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है:

### 1.3.1 सामाजिक मनोविज्ञान के प्रारंभिक वर्ष

सामाजिक मनोविज्ञान की शुरुआती जड़ों को जर्मन विद्वानों का एक समूह माना जाता है, जो हेगेल नामक दार्शनिक से प्रभावित थे। 1860 में, स्टिंथल और लाजर ने इस वोल्केरसाइकोलॉजी के लिए समर्पित एक पत्रिका की स्थापना की जिसमें सामूहिक मन के अध्ययन पर सैद्धांतिक और तथ्यात्मक लेख प्रकाशित किए। सामूहिक मन की इस अवधारणा को परस्पर विरोधी तरीकों से व्याख्यायित किया गया था: एक तरफ व्यक्ति के भीतर सोचने का एक सामाजिक तरीका और दूसरी तरफ ट्रांस-इंडिविजुअल मानसिकता का एक रूप जिसमें लोगों के पूरे समूह शामिल हो सकते हैं।

सामाजिक मनोविज्ञान पर दो शुरुआती पाठ्यपुस्तकें मनोवैज्ञानिक द्वारा लिखी गईं– विलियम मैकडॉगल (1908) ब्रिटेन में और समाजशास्त्री– रॉस (1908) अमेरिका द्वारा लिखी गई। हालांकि, इनमें से कोई भी पाठ्यपुस्तक एक आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक की तरह नहीं थी और उनके मुख्य विषय प्रमुख प्रवृत्ति,